'धान की सीधी बुआई से मजदूरी में 50 फीसदी की कमी आती है'

एग्रोनामी पैपसीको इंडिया द्वारा गांव सेखा में धान की सीधी बुआई करने संबंधी करवाए समारोह को संबोधित करते हुए वक्ता व (दाएं) उपस्थित किसान। *(सिंधवानी)*

बरनाला, 18 जुलाई (सिंधवानी, गोयल): देश भर विशेषकर पंजाब में धरती के नीचे गिर रहे पानी के स्तर व इसकी कमी को मद्देनजर रखते हुए पैपसीको इंडिया द्वारा पानी, बिजली व मजदूरी आदि की बचत के लिए धान की सीधी बिजाई करने वाली जो तकनीक तैयार की गई है, वह पंजाब के किसानों के लिए लाभदायक सिद्ध हो रही है। उक्त विचार जयदीप भाटिया वाइस अध्यक्ष एग्रोनामी पैपसीको इंडिया ने गांव सेखा में किसान भोला सिंह के खेत में किए एक समारोह के दौरान व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि धान की सीधी बुआई से 30 प्रतिशत पानी की बचत ही नहीं होती, बल्कि इससे ग्रीन हाऊस की गैसों का निकास भी 75 फीसदी कम हो जाता है। इसके अलावा मजदूरी में भी 50 फीसदी की कमी आ जाती है। बिजली व डीजल की बचत से किसानों को काफी लाभ प्राप्त होता है। पैपसीको वैज्ञानिक डाक्टर सुशील सुखियाल व प्रदीप बधवा डायरैक्टर तालमेल कमेटी ने बताया कि पैपसीको द्वारा 2006 में यह स्कीम शुरू की थी व उसी समय धान की फसल के लिए एक डायरैक्टर सीडिंग मशीन भी बनाई, जो एक जैसे फासले व एक जैसी गहराई से बीज बीजती है व ऐसी बुआई से नदीन समाप्त हो जाते हैं। जमीन को कद्दू करने की जरूरत नहीं पड़ती। धान की दूसरी फसल से यह 15 दिन पहले पक कर तैयार हो जाती है। यह स्कीम पंजाब के साथ-साथ हरियाणा, कर्नाटक, तामिलनाडु के किसानों द्वारा भी अपनाई गई है। सेखा गांव के किसान जो धान की सीधी बुआई करते आ रहे हैं, जिनमें महेन्द्र सिंह सग्गू, मनजीत सिंह, बलविन्द्र सिंह आदि ने कहा कि जो पैपसीको द्वारा धान की सीधी बुआई की स्कीम दी गई है, वह किसानों को आर्थिक पक्ष से लाभ पहुंचाने वाली है।

समारोह में पैपसीको के उक्त तीनों अफसरों के अलावा मुख्य कृषि अफसर पंजाब राकेश कलौंजीया, नितिन यादव जनरल मैनेजर आदि उपस्थित थे।

मालवा क्षेत्र के किसानों को पैपसीको द्वारा सम्मानित किए जाने का दृश्य। *(सिंधवानी)*